Appendix

परिशिष्ट

=x=x=x=x=x

=== पत्र

== विवेच्य पुस्तकें

= संदर्भ ग्रंथ की सूची

– पत्रिकाएँ

पत्र

ॐ1ॐ

श्री श्यामनारायण पाण्डेय

डुमराँव, मऊनाथ भंजन
आजमगढ़ ॐउ0प्र0ॐ
तिथि-28-1-75

-- 1946 आरती - सम्पूर्णानन्द, आनन्द पुस्तक भवन, पहड़िया, वाराणसी कैण्ट ॐउ0 प्र0ॐ

-- 1938

1. त्रेता के दो वीर का ही तुमुल संशोधित और संवाधित संस्करण है,

2, 1930- माधव 3, 1932- आँसू के कण 4, 1934 रिमझिम	इन 3 छोटी पुस्तकों की कविताएँ प्राय: आरती ॐ स्फुटकाव्य ॐ में ही बाद में प्रकाशित हो गयी, किसी तरह " आरती " प्राप्त करें यदि न मिले तो मुझे सूचित करें,

ह0 ----- श्यामनारायण पाण्डेय
28-1-75,

2ॐ श्यामनारायण पाण्डेय

तिथि- 22-4-75

प्रिय श्री कुमारी जसबीर जी,

शुभाशी;

मैंने पहले ही पत्र में लिख दिया था कि मुझसे जो कुछ सहायता सम्पन्न हो सकेगी करूँगा, मुझे उम्मीद है आपको पुस्तकें मिल गयी

होंगी. यदि नहीं मिलेंगी तो अवश्य उपाय किया जायेगा.. के० जी० कदम एम० ए०, उमा विद्यालय मोडिनिंब जिला शोलापुर, महाराष्ट्र का रिसर्च समाप्त है. उनके पास सभी किताबें हैं. आपका मन कभी-कभी ऊब जाता है यह जानकर दुःख हुआ. प्रायः शुभकर्मों में बाधाएँ उपस्थित होती हैं उन्हें जो पार कर लेता है सारे विघ्नों को कुचलते हुए जो लक्ष्य प्राप्त करता है, वही संसार में अक्षय यश का भागी होता है और तो कायर हैं. श्रद्धा विश्वास रहित मनुष्य विषनणा से भी अधिक भयंकर है उससे समुन्नतः बहुत दूर है. आप साहस न छोड़े. एक दिन आप अपने लक्ष्य तक पहुँच कर यशस्वी एवं वर्चस्वी होंगी इसमें संदेह नहीं. आपसे कुई त्रुटि नहीं हुई है यदि कोई गलती होगी तो बच्ची ही तो है, आप कभी कलकत्ते जायेंगी तो मुझसे मिलेंगी यह जानकर प्रसन्नता हुई. पहले आपको मेरी सारी किताबें मिल जानी चाहिये. हाँ, मैंने लिखा था कि " जौहर " में किस किस सर्ग ने आप को प्रभावित किया अवश्य लिखें, मेरे संकलन में कदाचित वह काम दे दे. " जौहर " कई बार पढ़ें आपको नवीनता के साथ आर्य सभ्यता और संस्कृति की झलक मिलेगी । "

ह०-- श्यामनारायण पाण्डेय

॥3॥

जन समाचार सेवा — कन्नौज ॥उ० प्र०॥

प्रधान सम्वाददाता - जीवन शुक्ल — 18-5-76

एम० ए० ॥अंग्रेजी-हिन्दी॥,आचार्य

सुश्री जसबीर,

आपका पत्र मिला, आपने अपनी शोध का विषय अच्छा चुना है. यह अंग अधूरा ही था. क्या आप यह लिखने का

भी कष्ट करेंगी कि इस में आपने किन किन काव्यों को चुना है ।

मेरी अन्य प्रकाशित कृतियों के सम्बंध में जो जानकारी आपने चाही है ये निम्नांकित हैं...

1। वंशी तुम धर दो । काव्य संग्रह ।
2। सिंहद्वार । वीर काव्य ।
3। सप्तशती के मंत्र । काव्य रूपांतर ।
4 । पाये अनपाये । उपन्यास ।

इधर मेरी 4-5 पुस्तकें और एक साथ प्रकाशित होने जा रही है. मैं दो की पाण्डुलिपि भी तैयार कर चुका हूँ. " सिंहद्वार " तथा " पाये अनपाये " छोड़कर सभी के संस्करण सम्भवत: अप्राप्य हैं.

आपका
ह0 --- जीवन शुक्ल.

।4।

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय
दशहरा मैदान
उज्जैन ।म0 प्र0।
1-2-77

बहन जसबीर जी,

आपके शोध कार्य के लिए मेरा एक ही महाकाव्य " सरदार भगतसिंह " उपयोग में आ सकता है जो 1964 में प्रकाशित हुआ है. मेरा दूसरा महाकाव्य " चन्द्रशेखर आजाद " 1966 में प्रकाशित हुआ है और " सुभाषचन्द्र " काव्य तो अभी पिछले वर्ष ही प्रकाशित हुआ है. खेद है कि " सरदार भगतसिंह " महाकाव्य की व्यक्तिगत प्रति मेरे पास नहीं है और बाजार में भी वह अनुपलब्ध है. दिल्ली

के राष्ट्रीय पुस्तकालय में उसकी प्रति आपको पढ़ने को मिल सकती है या " सरदार भगतसिंह के सभी भाइयों के पास उसकी प्रतियाँ हैं और बीबी अमर कौर के पास भी हैं ।

आपका भाई

ह० --- श्रीकृष्ण सरल

15

राज्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

1- विक्रमादित्य मार्ग
लखनऊ
16 फरवरी 1977

प्रिय बहन जसबीर कौर,

सरदार भगतसिंह के विषय में सामग्री हेतु पुस्तक सम्बन्धी आपकी चिट्ठी मिली. जिस पुस्तक के लिए आपने लिखा है वह इस समय मिल नहीं रही है. तलाश करा रहा हूँ. सरदार भगतसिंह से सम्बन्धित कुछ 1. अमर शहीद सरदार भगतसिंह 2. संस्मृतियां क्रांतिकारी ~~शहीद~~ शहीदों के संस्मरणात्मक रेखाचित्र पुस्तकें भेज रहा हूँ. आशा है इससे आपको काफी मदद मिलेगी.

सद्भावनाओं सहित.

भवदीय

ह० -- सरदार कुलतारसिंह

(6)

साहित्य वारिधि
डा० मलखान सिंह सिसौदिया
पी-एच० डी.

कल्पना कुटीर
एटा (उ० प्र०)
12-3-77

प्रिय जसबीर जी,

मैंने अपने काव्य " सूली और शान्ति " की एक प्रति रजिस्ट्री द्वारा कल ही तुम्हारे लिए भेजी है. संभवतः इस पत्र के साथ वह भी तुम्हें मिलेगी. अपने कविता संकलन " बंगाल के प्रति और अन्य कविताएँ " की कुछ रचनाएँ, जो तुम्हारे शोध विषय से सम्बन्धित हो सकती हैं, टाइप करा कर या हाथ से लिखा कर शीघ्र भेजूँगा. " परिवेश और काव्य " के संबंध में भी अपने विचार उन्हीं के साथ भेजूगा. ये सब चीजें दो सप्ताह के भीतर तुम्हें मिल जायेगी.

मैंने तुम्हारे शोध विषय के काल के संदर्भ में अपने काव्य " सूली और शान्ति " के संबंध में पुनर्विचार किया और इस परिणाम पर पहुँचा कि तुम इस काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन अपने शोध प्रबंध में दे सकती हो. इसके दो कारण है, प्रथम तो यह काव्य भारत-परक संघर्ष से सम्बद्ध है जो 1965 में ही हुआ था. द्वितीय अंतिम अध्याय को छोड़कर इसके सभी अध्याय मैंने वर्ष 1965 में ही लिखे थे, सितम्बर 1965 और दिस० 1965 के बीच. कुछ कारणों से जिनमें प्रकाशक का प्रमाद भी शामिल है, इसका प्रकाशन विलम्ब से हो सका. तुम्हारे शोध विषय का काल 1965 तक है. अतः इस काव्य को इसमें लिया जा सकता है. समीक्षात्मक अध्ययन देते समय भूमिका में तुम मेरा उपर्युक्त कथन दे सकती हो. अंतिम अध्याय को छोड़कर यह काव्य 1965 में ही लिखा गया था. चाहो तो एक प्रश्न के रूप में तुम मुझसे यह पूछ लो और जो उत्तर मैं दूँ

उसे अपने शोध प्रबन्ध में उद्धृत कर दो, जिससे यह प्रमाणित हो कि यह काव्य 1965 की रचना ही है.

" सूली और शान्ति " के विषय में समीक्षकों का मत है कि हिन्दी में आधुनिक युद्ध काव्य का मत एक मात्र ग्रंथ है जिसमें वायुयान -युद्ध, टैंक-युद्ध और अन्य आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों का प्रभावशाली वर्णन है. इसमें साहस, शौर्य और बलिदान की अनुपम गाथाएँ हैं, साथ ही युद्ध - योजनाओं, दाव-पेचों, राजनीति एवं कूटनीति का भी चित्रण है. एक शोधार्थी ने जिसका विषय " हिन्दी काव्य में सीमा-संघर्ष " था अपना एक चौथाई शोध प्रबंध इसी काव्य के आधार पर लिखा और लखनऊ विश्वविद्यालय से पी-एच0 डी0 की उपाधि प्राप्त की. मेरा विचार है कि तुम्हें भी अपने शोध प्रबंध के लिए इसमें पर्याप्त सामिग्री मिल सकेगी ।

शुभेच्छक

ह0-- मलखानसिंह सिसौदिया

§7§

डॉ0 मलखानसिंह सिसौदिया 25-2-77

अपने पुराने कविता संकलन " बंगाल के प्रति और अन्य कविताएँ " में से कुछ कविताएँ जो तुम्हारे विषय से सम्बद्ध हो सकती हैं टाइप करा कर भेज रहा हूँ. संकलन में जिस पृष्ठ पर कविताएँ छपी हैं वह भी अंकित कर दिया है. अन्य आवश्यक विवरण भी संक्षेप में लिखदिया है. यदि तुम इन कविताओं के सम्बन्ध में अन्य जानकारी मुझसे चाहो तो जब आवश्यक हो मुझे निःसंकोच लिख दें. मैं तुरन्त उत्तर दूँगा.

पुनश्च - मेरी कुछ कविताएँ अन्य संकलनों में भी निकली है जो भारत पर चीन के आक्र-

सस्नेह

-मणों से सम्बद्ध हैं. यदि मिल सकीं तो भेज दूँगा.

ह० --मलखानसिंह
सिसौदिया

" बंगाल के प्रति और अन्य कविताएँ " सन् 1943-44 में द्वितीय विश्वयुद्ध के अवसर पर लिखी गयी थीं. फासिस्त और नाजी सेनाएँ यूरोप विजय कर आफ्रीका को विजय करती हुई भारत को अपना लक्ष्य बनाकर बढ़ रही थी. दूसरी ओर जापानी सेनाएँ स्याम- बर्मा रौंदती हुयी बंगाल की सीमा पर आ चुकी थीं. बंगाल भीषण अकाल और महामारी का शिकार था.

मैं उन दिनों भयानक रूप से बीमार पड़ गया था. यह कविता उसी मनःस्थिति में लिखी गयी थी.

- मलखानसिंह सिसौदिया.

डॉ० बजेन्द्र अवस्थी
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
बे० मे० शिवनाथ दास कालेज, बदायूं (उ०प्र०)

टोंक महल
बदायूँ

21-5-77

प्रिय जसबीर जी,

आपके पत्रानुसार " सिंहगढ़ " विजय भेज रहा हूँ. अलख/ अंतराल का कारण मेरे पास पुस्तक का न होना था. लखनऊ से लाने पर ही भेजने में सक्षम हुआ हूँ . वैसे पूरा " शिवकाव्य " अभी छप नहीं सका.है । अन्य विशेष वृत्तों के बारे में जानना चाहें तो लिखें मैं संबद्ध अंश भेज दूंगा.

शेष शुभ

सस्नेह

ह० -- बजेन्द्र अवस्थी.